सेवा–कालीन अध्यापकों के शिक्षण कौशल विकास में विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों का प्रभाव

जितेन्द्र कुमार महण*

सारांश

शिक्षा किसी देश के विकास का मूलमंत्र है, और मानव जीवन के विकास के लिए शिक्षा एक प्रमुख आभूषण है। मगर शिक्षा के साथ–साथ संस्कार और कौशल विकास आज के समय की जरूरत है। वर्तमान समय शिक्षण अधिगम सम्बन्धी अनेक विधियों, प्रविधियों व युक्तियों का विकास हो गया है और शिक्षक को इन विधियों के बारे में बच्चों प्रभावी शिक्षण करवा सके। कौशल और ज्ञान विशिष्टता के किसी क्षेत्र में वृद्धि और विकास प्रेरक बल होता है। कौशल विकास के मामले में दुनिया के बाकी देशों के मुकाबले भारत काफी पीछे हैं। हनुमानगढ़ जिले में जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम द्वारा 2001 से प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालयों के विकास हेतु विभिन्न प्रकार के कार्य किए जा रहे हैं। जिनमें बालक/ बालिकाओं को विद्यालय में प्रभावी शिक्षण विधियों तथा टीएलएम द्वारा अध्यापन करवाने के लिए अध्यापकों को समय–समय पर प्रशिक्षण दिया जाता है। आज के समय विज्ञान एवं तकनीकी का इतना विकास हो गया है कि थोड़े से समय में ज्ञान की वृद्धि बहुत ही तेज गति से हो रही है। अतः शिक्षकों के शिक्षण कौशल विकास में विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए इस समस्या को लिया गया है।

मुख्य शब्द : कौशल विकास, सेवा–कालीन अध्यापक, प्रशिक्षण कार्यक्रम

प्रस्तावना

पुराने जमाने में हमारे कौशल को पूरे विश्व में जाना जाता था। कहा जाता है कि भारत दुनिया का सबसे युवा देश है, जिसमें 35 वर्श से कम उम्र के 65 प्रतिशत लोग निवास करते हैं। शिक्षा किसी देश के विकास का मूलमंत्र है, और मानव जीवन के विकास के लिए शिक्षा एक प्रमुख आभूषण है। मगर शिक्षा के साथ–साथ संस्कार और कौशल विकास आज के समय की जरूरत है। शिक्षण को एक कला तथा विज्ञान दोनों की संज्ञा दी जाती है। जब शिक्षण को एक कला के रूप में समझने का प्रयास करते हैं तब यह अवधारणा होती है कि अच्छे शिक्षक जन्मजात होते हैं और उनसे विशिश्ट शिक्षण कौशल होते हैं। एक प्रभावशाली शिक्षण में विशेश कौशलों का समावेश होता है। एक अच्छा शिक्षक उन्हें अपने कक्षा–शिक्षण में उपयोग करता है। एसएसए द्वारा शिक्षकों के शिक्षण कौशल विकास हेतु विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रमों को आयोजित किया जाता है। ये प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षक को क्रियाशील व ऊर्जावान बनाने में अहम भूमिका निभाते हैं। वर्तमान समय शिक्षण अधिगम सम्बन्धी अनेक विधियों, प्रविधियों व युक्तियों का विकास हो गया है और शिक्षक को इन विधियों के बारे में बच्चों प्रभावी शिक्षण करवा सके। पूर्व समय से शिक्षण का मुख्य कौशल व्याख्यान निरन्तर चल रहा है। केवल विज्ञान विशय में श्यामपट्ट व प्रयोगशाला का प्रयोग किया जाता था। अध्यापकों को लगातार बोलना पड़ता था। जिससे अध्यापक थक जाता था और छात्र निश्क्रिय होकर सुनते रहते थे। उन्हें क्रियाशील करने के लिए विभिन्न प्रकार के गतिविधि आधारित कार्य करवा सकते हैं। जैसे कि प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री ऐडगर डेल ने अनुभव का शंकु (Cone of experience) का विकास किया है। उसके आधार पर कहा जाता है कि व्यक्ति जितने अधिक ज्ञानेन्द्रियों का का उपयोग ज्ञान प्राप्त करने में करता है वह उसके लिए उतना ही सरल व लम्बे समय तक मस्तिश्क में स्थित हो जाता है। व्याकरण विधि द्वारा केवल सुनने की ज्ञानेन्द्रिय का ही सही उपयोग हो पाता है। इसलिए उसे वह जल्दी भूल भी जाता है। शिक्षण अधिगम का सूत्र स्थूल से सूक्ष्म की ओर बताया गया है अर्थात किसी व्यक्ति को प्रभावी अधिगम करवाने हेतु उसे स्थूल ज्ञान के बारे में बताया जाए अर्थात स्थूल वस्तु को लेकर शिक्षण करवाएंगे तो छात्रों को अच्छी तरह समझ में आएगा और उसके बाद सूक्ष्म ज्ञान दिया जाएगा तो विशयवस्तु को प्रभावी ढंग से सीख सकेगा। इसलिए अध्यापकों द्वारा पुनः पुराने व नवीन शिक्षण कौशलों का सही उपयोग करने के लिए

*शोध अध्येता, टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर एवं व्याख्याता, श्री गुरु नानक खालसा शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, हनुमानगढ़ (राज.)

इस तरह के कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। इस प्रकार के शिविर में विशय विशेश में पारंगतता लाने के लिए आयोजित किया जाता है।

अध्ययन की आवश्यकता व औचित्य

भारत में गुणवत्ता और कौशल तरीकों पर मांग और आपूर्ति बेमेल है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन की जरूरतों को पूरा करने के लिए रोजगार की आवश्यकता होती है, और जब व्यक्ति रोजगार की तलाश में जाते हैं तो बाजार अप्रशिक्षित कामगार की बजाय प्रशिक्षित कामगार की मांग करता है। कौशल और ज्ञान विशिष्टता के किसी क्षेत्र में वृद्धि और विकास प्रेरक बल होता है। कौशल विकास के मामले में दुनिया के बाकी देशों के मुकाबले भारत काफी पीछे हैं। हनुमानगढ़ जिले में जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम द्वारा 2001 से प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालयों के विकास हेतु विभिन्न प्रकार के कार्य किए जा रहे हैं। जिनमें बालक/बालिकाओं को विद्यालय में प्रभावी शिक्षण विधियों तथा टीएलएम द्वारा अध्यापन करवाने के लिए अध्यापकों को समय–समय पर प्रशिक्षण दिया जाता है। आधुनिक युग में ज्ञान के अत्यधिक विस्फोट और शिक्षण संस्थाओं में वृद्धि होने से परम्परागत कक्षा शिक्षण को अपनाने में कई तरह की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। आज के समय विज्ञान एवं तकनीकी का इतना विकास हो गया है कि थोड़े से समय में ज्ञान की वृद्धि बहुत ही तेज गति से हो रही है।

छात्र–छात्राओं में वृद्धि होने के कारण गुणात्मक शिक्षा में कमी महसूस की जा रही है। गुणात्मक शिक्षा देने के लिए अध्यापकों को नवीन पद्धतियों एवं उपागमों के लिए प्रशिक्षण दिया जाना जरूरी है। पूर्व सेवाकालीन प्रशिक्षण में बताये गये अध्यापन के तौर–तरीकों का इतना प्रचार प्रसार नहीं हो पाता है, और न ही उनको विधिवत् ढंग से कक्षा में उपयोग कर पाता है। इस प्रकार की नवीन शिक्षा व्यवस्था के लिए ऐसे निश्णात अध्यापकों की आवश्यकता है जो प्रजातांत्रिक मूल्यों व रीतियों को ध्यान में रखते हुए कक्षा में अध्यापन कार्य करवा सकें तथा छात्र–छात्राओं के सामने ऐसी शैक्षणिक परिस्थितियां उत्पन्न कर सकें जो छात्रों को सोचने के लिए मजबूर कर सके। इस प्रकार छात्रों की संख्या में लगातार हो रही वृद्धि को ध्यान में रखते हुए नवीन शिक्षण कौशलों में पारंगतता लाने हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता होती है। इसलिए विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के द्वारा शिक्षकों के शिक्षण कौशल में विकास होना जरुरी है। अब प्रोजेक्टर्स (स्लाइड प्रोजेक्टर, फिल्म प्रोजेक्टर, ओवर हैड प्रोजेक्टर व एल. सी.डी. या मल्टी मीडिया प्रोजेक्टर) मोबाइल, कम्प्यूटर्स को कक्षा कक्ष में प्रयोग किये जाने लगा है। जब इन विद्याओं व उपकरणों की विधिवत् जानकारी अध्यापकों को नहीं होगी तब तक शिक्षण को प्रभावशाली नहीं बनाया जा सकता है। जब शिक्षण को एक विज्ञान के रूप में समझने का प्रयास करते हैं तब यह अवधारणा होती है कि अच्छे शिक्षक प्रशिक्षण द्वारा तैयार किये जा सकते हैं और उनमें विशिश्ट शिक्षण–कौशलों का विकास किया जा सकता है। अतः अध्यापकों को शिक्षण कौशल विकास के लिए प्रशिक्षण दिया जाना बहुत ही आवश्यक हो गया है। इसलिए शिक्षकों के शिक्षण कौशल विकास में विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए इस समस्या को लिया गया है।

समस्या कथन

इस अध्ययन में शोध समस्या को अग्रांकित रुप में समझा गया है–''सेवा–कालीन अध्यापकों के शिक्षण कौशल विकास में विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों का प्रभाव''

अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन हेतु शोधकर्त्ता द्वारा निम्नांकित उद्देश्यों को निर्धारित किया गया है–

1. जिलें में आयोजित विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के बारें में अध्यापकों की राय जानना।
2. शिक्षक प्रशिक्षण के बाद विद्यालयों में किए जाने वाले अध्यापन कार्य की स्थिति को जानना।
3. प्रशिक्षण कार्यक्रम के संदर्भ व्यक्तियों के बारें में शिक्षकों की राय जानना।
4. अध्यापकों में शिक्षण कौशल विकास हेतु आयोजित टीएलएम कार्यशाला के प्रभाव का पता लगाना।
5. अध्यापक प्रशिक्षण मोड्यूल के बारें में गुणात्मक विश्लेशण करना।
6. अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम को अधिक प्रभावी बनाने हेतु आवश्यक सुझाव देना।

अध्ययन क्षेत्र

इस अध्ययन का क्षेत्र सम्पूर्ण हनुमानगढ़ जिले के केवल हनुमानगढ़ ब्लाक के प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालयों को सम्मिलित किया गया।

विधि, प्रविधि व उपकरण

इस अध्ययन में शोधकर्त्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। प्रश्नावली व साक्षात्कार द्वारा प्रदत्तों को एकत्रित किया गया। इसमें अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम से जुड़े अध्यापकों व संदर्भ व्यक्तियों के मतों के आधार पर तथा शोधकर्त्ता द्वारा कुछेक विद्यालयों का अवलोकन कर वस्तु स्थिति का पता लगाया गया तथा उसके आधार पर प्रदत्तों का विश्लेशण कर आवश्यक सुझाव दिये गए।

न्यादर्श

इस अध्ययन में 100 अध्यापकों को न्यादर्श में से सम्मिलित किया गया। इसके अलावा बीआरसीएफ, संदर्भ व्यक्तियों, कक्षा पांच के छात्र–छात्रों व प्रशिक्षण कार्यक्रमों से जुड़े अन्य व्यक्तियों का साक्षात्कार लिया गया। इस शोधकार्य पूर्ण को करने हेतु हनुमानगढ़ जिले के हनुमानगढ़ ब्लाक के प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों को इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया।

प्रयुक्त सांख्यिकी

इस अध्ययन में आंकडों के विश्लेशण हेतु विवरणात्मक सांख्यिकी का प्रयोग किया गया।

मुख्य निष्कर्ष

इस अध्ययन के मुख्य निश्कर्श निम्नांकित हैं–

1. 80.67 प्रतिशत अध्यापकों ने प्रशिक्षण कार्यक्रमों में अध्यापकों को शिक्षण कौशलों का प्रयोग करना बताया गया है।
2. 42.60 प्रतिशत अध्यापकों ने कहा है कि प्रशिक्षण कार्यक्रमों में वास्तविक कार्य कम होकर दिखावा अधिक किया जाता है। जबकि 56 प्रतिशत अध्यापकों की राय में प्रशिक्षण कार्यक्रमें में वास्तविक कार्य होता है।
3. 93.65 प्रतिशत अध्यापकों के मतानुसार प्रशिक्षण कार्यक्रमों के द्वारा उनके ज्ञानार्जन में वृद्धि होती है। 1.59 प्रतिशत ने अपनी राय इस कथन के प्रति व्यक्त करने में असमर्थता प्रकट की है।
4. 76.65 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों ने कार्यक्रम में ठहरने की अच्छी व्यवस्था बताई।
5. 71 प्रतिशत अध्यापकों ने डीपीईपी द्वारा चलाये कार्यक्रमों को उच्च स्तरीय माना है। जबकि 27.73 प्रतिशत ने इसे नहीं में अपनी अभिव्यक्ति प्रकट की है।
6. 77 प्रतिशत अध्यापकों ने कहा है कि सन्दर्भ व्यक्तियों द्वारा अध्यापन में नवीन यन्त्रों जैसे– कम्प्यूटर, प्रोजेक्टर, टीवी आदि का प्रयोग नहीं किया जाता है। केवल 9.33 प्रतिशत अध्यापकों की राय में नवीन यन्त्रों का प्रयोग किया जाता है। 13. 67 प्रतिशत ने अपना मत प्रकट करने में असमर्थता दर्शाई है।
7. 58.66 प्रतिशत अध्यापकों की राय में कार्यशाला में स्थानीय उपलब्ध साधनों के प्रयोग से टीएलएम बनाना सीखया जाता है।
8. 43.93 प्रतिशत अध्यापकों ने प्रशिक्षण कार्यक्रमों को आवासीय होने के सम्बन्ध में मत व्यक्त किया है। जबकि 58.69 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों के आधार पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आवासीय नहीं होना चाहा है।
9. 64.67 सम्भागियों ने शिविर में कम लागत से बनने वाले सामग्री के बारे में बताया गया है।
10. 33.34 प्रतिशत अध्यापकों ने बताया है कि शिविर में कार्यकारी मॉडल बनाना सीखाया जाता है। 57 प्रतिशत ने कहा है कि शिविर में कार्यकारी मॉडल बनाना नहीं सीखाया जाता है।
11. 92.33 प्रतिशत अध्यापकों की राय में प्रशिक्षण के बाद विद्यालयों में रूचिकर व आनन्दमयी वातावरण बनाने में सहायता प्राप्त हुई।
12. 91.33 प्रतिशत अध्यापकों ने बताया है कि प्रशिक्षण के दौरान विशय मॉडल दिया जाता है।
13. 66.66 प्रतिभागियों के अनुसार विद्यालय में आयोजित किये जाने वाली पाठ्यसहगामी क्रियाओं में सुधार हुआ है।
14. 91.34 प्रतिशत अध्यापकों की राय में कलस्टर स्तर पर गठित अध्यापन योजना समिति की मासिक बैठक होती है।
15. 68.34 प्रतिशत अध्यापकों की राय में प्रशिक्षण देने हेतु अनुभवी व विशेशज्ञ सन्दर्भ व्यक्तियों का चयन किया जाता है।

अध्यापक शिक्षण कौशल में प्रशिक्षण के दौरान आने वाली समस्याएं

1. विद्यालयों में अनुकूल वातावरण व नवीन शिक्षण तकनीकों का अभाव;
2. शिक्षण कौशल में प्रतिभागियों की रूचि कम होना;
3. शिक्षण कौशल में विशेशज्ञ सन्दर्भ व्यक्तियों और नवीन तकनीकी से सम्बन्धित साहित्य, सन्दर्भ पुस्तकों का अभाव;

4. शिक्षण कौशल विकास हेतु प्रशिक्षण का समय अनुकूल न होना;
5. कलस्टर स्तर पर गठित अध्यापन योजना समिति की मासिक बैठक नियमित नहीं होना।

विद्यालय में शिक्षण कौशल आयोजन में आने वाली मुख्य बाधाएं

1. मूलभूत सुविधाओं का और नवीन तकनीकी साधनों का उपलब्ध न होना;
2. स्टाफ कम होना व उपलब्ध स्टाफ का शिक्षण के अलावा अन्य कार्यों में व्यस्त होना;
3. सरकारी विद्यालयों में कक्षाओं में छात्र संख्या अधिक होना;
4. कमजोर सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाले बच्चों का अधिक होना;
5. सहायक सामग्री का आसानी से उपलब्ध न होना।

मुख्य सुझाव

शोध कार्य के प्रभावी प्रशिक्षण हेतु निम्नांकित मुख्य सुझाव दिये गए–

1. कौशल विकास के पाठ्यक्रमों को क्षेत्र में स्थित उद्योगों से जोड़कर अधिक उपयोगी बनाया जा सकता है। सभी पाठयक्रमों में आधुनिक तकनीकी और आई.सी.टी के उपयोग का समावेश होना चाहिये। शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं की संख्या बढ़ाई जाये तथा प्रशिक्षण के स्तर को उच्च बनाया जाये।
2. देश के सभी तकनीकी और उच्च शिक्षण संस्थानों में कौशल विकास (Skill development) को शिक्षा का अनिवार्य अंग बनाने की कोशिश होनी चाहिए।
3. शिक्षक प्रशिक्षण के द्वारा नवीन पद्धतियों के अनुसार विशयवस्तु का अध्यापन करवाना होता है। अतः शिक्षक को भी नवीन शिक्षा के उद्देश्यों, लक्ष्यों और कार्यक्रमों को समाज की आवश्यकता के अनुरूप ढालते रहना चाहिए।
4. विद्यार्थियों को विश्व–स्तरीय कौशल प्राप्त करने के लिये प्रेरित किया जाये और समाज के सभी वर्गों को शामिल करते हुए बिना किसी लिंग भेद के कौशल विकास और तकनीकी शिक्षा के अवसर उपलब्ध करवाये जाने चाहिए।
5. शिक्षक प्रशिक्षण में ज्ञानात्मक भाव के साथ ही साथ शिक्षण–विधियों, कक्षा संचालन, समाज सहयोग आदि क्रियाएं ऐसी हैं, जिनका सम्बन्ध इन कार्यक्रमों में ज्ञानात्मक प्रशिक्षण से अधिक है, साथ ही साथ भविश्य में इन विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है, इसका प्रशिक्षण भी दिया जाना चाहिए।
6. शिक्षण की विभिन्न विधियों का प्रदर्शन, आने वाली कठिनाइयों का समाधान, मनोवैज्ञानिक पहलुओं का ज्ञान इस प्रशिक्षण में दिया जाना चाहिए। विद्यार्थियों का मूल्यांकन किस प्रकार से किया जाए, इसका भी समावेश प्रशिक्षण में किया जा सकता है।

संदर्भ

एफ. एन. करलिंगर (1983). फाउन्डेशन्स ऑफ बीहेवरल रिसर्च, न्यु देहलीः सुरजीत पब्लिकेशन्स।

एमएचआरडी (1989). नेशनल पॉलिसी आन एजुकेशन–1986, पीऑए–1990, न्यु देहलीः गवरनमेंट ऑफ इन्डिया प्रेस।

यूनेस्को (1998). टीचर एन्ड टीचिंग इन अ चेजिंग वर्ल्ड, वर्ल्ड एजुकेशन रिपॉर्ट, पेरिस।

सिंह, मया शंकर (2007). शैक्षिक प्रबंधन एवं शिक्षण तकनीकी, आगराः अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स।

राजपूत, जे. एस. (1990). युनिवर्सलाइजेशन ऑफ एलीमेंटरी एजुकेशनः रोल ऑफ टीचर एजुकेशन, न्यु देहलीः विकास पब्लिशिंग हाउस।

सेन्डहाल्ज जे., रिंगस्टॉफ सी. एन्ड डायर डी. (1997). टीचिंग विद टेक्नोलॉजी, न्यू यॉर्कः टीचर्स कॉलेज प्रेस।